THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–2, Issues– 2 April-June: 2025

वर्तमान वैश्विक सन्दर्भ मे भारत के भू-राजनीतिक महत्व का भौगोलिक अध्ययन

डॉ० राम बचन मौर्य,
असिस्टेंट प्रो०
भूगोल विभाग,
राम अवध यादव गन्ना कृषक पी जी कालेज ताखा,
शाहगंज- जौनपुर।

सारांश

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर भूगोल के प्रभावो का अध्ययन भू-राजनीतिक (Geopolitics) कहलाती है। दूसरे शब्दों में भू-राजनीतिक विदेश नीति के अध्ययन की वह विधि है जो भौगोलिक चरो के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय, राजनैतिक गतिविधियों को समझने, उनकी व्याख्या करने और उनका अनुमान लगाने का कार्य करती है। भौगोलिक चर के अंतर्गत उस क्षेत्र का क्षेत्रफल, जलवायु, स्थलाकृति, जनसांख्यिकी, प्राकृतिक संसाधन तथा अनुप्रयुक्त विज्ञान आदि आते हैं। यह शब्द सबसे पहले एडोल्फ जेलेन ने सन 1899 में प्रयोग किया था। [1] भू-राजनीति का उद्देश्य राज्यों के मध्य संबंध एवं उनकी परस्पर स्थिति के भौगोलिक आयामो का अध्ययन करना है। हाउशोफर के अनुसार "भू राजनिति एक गतिक विज्ञान है जो विश्व के राजनितिक परिवर्तनो के साथ-साथ बदलता रहता है।" [2]

प्रस्तावना

पूर्वी गोलार्ध में भारत की अवस्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंद महासागर के उत्तरी सिरे पर भारत देश इस प्रकार स्थित है कि यह पूर्वी गोलार्द्ध के मध्य में पड़ता है। यह देश यूरोप और अमेरिका के पश्चिमी भागों से लगभग समान दूरी पर स्थित है। अनेक अंतर्राष्ट्रीय वायु मार्ग एवं सामुदायिक मार्ग इसकी सीमा से या इसके तट के निकट से होकर निकलते हैं। भारत से पूर्व और दक्षिण पूर्व की ओर ये मार्ग चीन व जापान को पश्चिमी एवं दक्षिण पश्चिम में ग्रेट ब्रिटेन, पश्चिमी यूरोप, संयुक्त राज्य, लैटिन अमेरिका के देशो और पूर्वी तथा दक्षिणी अफ्रीका को और दक्षिण में श्रीलंका, सिंगापुर, मलेशिया, इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड को जाते हैं। इस प्रकार पूर्वी देशों से पश्चिमी और पश्चिमी देशों से सुदूरपूर्व की ओर जाने वाले प्रमुख व्यापारिक मार्ग भारत से होकर निकलते हैं। [3]

स्वेज नहर के बन जाने के बाद भारत की स्थिति का महत्व और भी बढ़ गया है क्योंकि इसके द्वारा पश्चिमी यूरोपीय देशों और भारत के पश्चिमी तटीय बंदरगाहों के बीच लगभग 4800 किलोमीटर दूरी कम हो गई है। स्वेज नहर और पूर्व में मलक्का जल संयोजक के आरंभ होने या उनमें से निकलने वाले सभी जलयान भारत से होकर निकलते हैं इससे भारत की दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय महत्ता स्पष्टत: प्रतिष्ठित हो जाती है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–2, Issues– 2 April-June: 2025

इस प्रकार से स्पष्ट है कि भारत पश्चिमी औद्योगिक देशों को एवं वहाँ से पूर्व के विकासशील देशों से मिलाने के लिए एक श्रृंखला का कार्य करता है। भारत को दोनों प्रकार के देशों से निर्मित एवं कच्चे माल का आयात तथा निर्यात करने में पूरी-पूरी सुविधा रहती है।

भू-राजनितिक महत्व-

अपनी ऐसी महत्वपूर्ण स्थिति के कारण ही प्राचीन काल से ही भारत का संपर्क तत्कालीन संपूर्ण सभ्य विश्व से था। प्राचीन काल में प्रमुख व्यापारिक स्थल मार्गों का केंद्र भारत ही था। पूर्व की ओर चीन, जापान, थाईलैंड, कंबोडिया, सुमात्रा, जावा, बाली आदि देशो तक तथा पश्चिम की ओर अरब का फारस, मिश्र, यूनान और रोम तक भारतीय व्यापारियों के जहाज विभिन्न प्रकार की बहुमूल्य वस्तुये जैसे गरम मसाले, सोना, हीरा, जवाहरात, रेशमी एवं सूती वस्त्र, खाद्य व कलात्मक वस्तुएं आदि ले जाया करते थे। दक्षिण भारत के चोल, पल्लव, पाण्ड्य आदि राज्यों ने तो पूर्वी देशों में तो उपनिवेश तक स्थापित किए थे, जहाँ भारतीय संस्कृति के चिन्ह आज भी दिखाई देते हैं। भारत से ही बौद्ध धर्म दक्षिणी पूर्वी एवं पूर्वी एशिया में तेजी से फैला है।

हवाई मार्गों की दृष्टि से भी भारत की स्थिति उत्तम कहीं जा सकती है। पश्चिमी देशों से सुदूरपूर्व जैसे चीन, जापान, इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया को जाने वाले वायुयान भारत से होकर ही निकलते हैं। दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता आदि अंतर्राष्ट्रीय महत्व के हवाई अड्डे हैं, जहाँ पर ठहरकर वायुयान ईंधन एवं यात्री लेते हैं तथा यहां आपातकालीन मरम्मत भी कराई जा सकती है।[4]

भारत की स्थिति का महत्व इस बात से और भी स्पष्ट हो जाता है कि इसके निकटवर्ती महासागर का नाम भारत के ही आधार पर हिंद महासागर पड़ा है। हिंद महासागर के तट पर जितने भी देश अवस्थित हैं उनमें भारत की तटीय सीमा हिंद महासागर के साथ सर्वाधिक लंबी है।

स्थलीय स्थिति के दृष्टि से भी भारत का महत्व है। दक्षिण एशिया के तीन बड़े प्रायद्वीपों में भारत सबसे बड़ा और अन्य दो प्रायद्वीपों (अरब तथा हिंद चीन) के बीच में है। संसार की सर्वाधिक वर्षा मानिसराम (1063 सेमी मेघालय) भारत में ही स्थित है। संसार की सबसे स्वच्छ जल वाली पवित्र नदी गंगा इसी भूभाग में प्रवाहित होती है। दक्षिण एशिया के इस देश में विषुवत रेखीय जलवायु से लेकर टुण्ड्रा तुल्य जलवायु सभी यहां पाई जाती हैं। इसी प्रकार विश्व की सभी वनस्पतियां इस देश में विद्यमान है। विश्व के सभी प्रमुख धर्म हिंदू, बौद्ध, इस्लाम, सिख, जैन आदि के साथ ही 33 करोड़ देवी देवताओं के उपासक भी यहां निवास करते हैं। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश भी कहा जाता है।[5]

निष्कर्ष:-

राज्यों का संघ भारत संपूर्ण प्रभुतासंपन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक, गणराज्य है जिसमें संसदीय प्रणाली की सरकार है। भारत में 29 राज्य तथा 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं। आर्थिक वृद्धि दर के दृष्टिकोण से भारत चीन के बाद विश्व का दूसरा तीव्र आर्थिक विकास दर वाला देश है। औद्योगिक दृष्टि से भी भारत दक्षिण एशिया में सबसे आगे है। परिवहन संचार एवं सैन्य बल की दृष्टि से दक्षिण एशिया में भारत का स्थान प्रथम है। अनेक विभिन्नताओं एवं विशेषताओं के कारण ही पश्चात विद्वानों ने भारत को एक उपमहाद्वीप की संज्ञा दी है। डॉक्टर क्रेसी का तो यहां तक कथन है कि

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–2, Issues– 2 April-June: 2025

भारत को महाद्वीप कहलाने का उतना ही अधिकार है जितना यूरोप को, क्योंकि यहां का क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का 2.4%, जनसंख्या लगभग 18.5% , अनेक भाषाएं एवं विभिन्न धर्मावलंबी यहां पाए जाते हैं । भारत के विपुल सभ्यता के कारण ही इसे प्राय: भविष्य का देश (Land of Future) कहा जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. तिवारी ; रामचंद्र : राजनितिक भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन, प्रयागराज पृष्ठ सं.10-11
2. चौहान ; पी०आर: राजनितिक भूगोल, वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर ।
3. मामोरिया; चतुर्भुज : भारत का भुगोल, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा ।
4. ओझा; शिवकुमार : भारत का भुगोल, बौद्धिक प्रकाशन, प्रयागराज ।
5. इण्टरनेट ; पत्र –पत्रिका एवं लेख